श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ३

अगस्त-२०२३

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ६. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. .....द्वारा तत्वज्ञान रुपी अर्क प्राप्त होने से दोषों से मुक्ति और गुणों से जीवन बनकर ही रहता है ।
२. न्याय से उपार्जन किया हुआ द्रव्य ही ..... में वापरना ।
३. तत्व सुनने की इच्छा या जिज्ञासा बुद्धि का ..... गुण है ।
४. जिस काल में दिन प्रति दिन समस्त पदार्थों के वर्णादि गुणों की वृद्धि होती है वह ..... है ।
५. जीवन में ..... का गुण मिले हुए मानवभव को सफल बनाने का श्रेष्ठ उपाय है ।
६. तीसरी प्रदक्षिणा देते समय जिन मंदिर रुप ..... के गुणों को हृदय में याद कर लेना ।
७. सुपार्श्वनाथ प्रभु ..... नगरी में केवलज्ञान पाये ।
८. प्रत्येक वनस्पतिकाय को छोडकर बाकी रहे ..... अदृश्य होने से हम चर्मचक्षु से देख नहीं सकते ।
९. सिद्ध के जीव लोक के छोर पर जाकर अटक जाते है, क्योंकि आगे ..... का अभाव है ।
१०. आर्यता के संस्कारों से रहित देश ..... है ।
११. श्री अभिनंदन प्रभु ..... के भव में सम्यक्त्व पाये ।
१२. शरीर योग्य पुद्गलों को ग्रहण करके उसे रक्त आदि में परिणमित करने की शक्ति .....है ।
१३. ..... बिना के सब गुण अंक बिना के शुन्य जैसे है ।
१४. मन में ..... समान प्रभु को स्थापित करना ।
१५. अति सूक्ष्म काल का ..... घटक समय है ।
१६. उपकारीयों के उपकार की स्मृति एंव प्रति उपकार करने की सदा तैयारी यह ..... का लक्षण है ।
१७. बर्तन वगैरह पदार्थों के घर्षण से टकराने से उत्पन्न होता नाद ..... है ।
१८. धर्म जीव को ..... की ओर ले जाता है ।
१९. ..... नाम के आरे में मनुष्य वैतादय पर्वत की दक्षिण उत्तर की तरफ रहे हुए गंगा सिंधू की गुफाओं में रहेंगे ।
२०. असत् का संग हमे ..... बनाता है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. किस आरे के लोग बोर प्रमाण भोजन कर संतुष्ट होने वाले होते है ?
२. परमात्मा के दर्शन करने जाते समय किसका त्याग सर्व प्रथम करना चाहिये ?
३. सुनी हुई वाणी भूले बिना स्मृति में रखना क्या है ?
४. पद्म प्रभु के प्रमुख गणधर का नाम ?
५. दोषों के प्रति धिक्कार और गुणों के प्रति पक्षपात क्या कहलाता है ?
६. जैन दर्शन अन्धकार को क्या मानता है ?
७. दीर्घदृष्टि वाली व्यक्ति कार्य प्रारम्भ करने से पहले किसका विचार करती है ?
८. जयवियराय सूत्र कौनसी मुद्रा में बोला जाता है ?
९. जीव जहाँ भी जाता है, कौन से पुद्गलों को ग्रहण करता है ?
१०. प्रभु के गुणगान पूर्वक विधिसहित चैत्यवंदन करना क्या कहलाता है ?
११. संभवनाथ प्रभु ने पूर्वभवमें क्या करके तीर्थंकर नाम कर्म बांधा ?
१२. स्कंध के साथ जुडा हुआ स्कंध का छोटे में छोटा अविभाज्य सूक्ष्म अणु क्या कहलाता है ?
१३. वालिया डाकु को वाल्मिकी ऋषि बनाने वाला कौन सा गुण था ?
१४. चंद्रकांत मणि में से निकलने वाला प्रकाश क्या कहलाता है ?
१५. छोटा सासुकृत भी नजर आये तो क्या करना चाहिये ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -

१) पअेसा २) दीहा ३) भास ४) पुग्गला ५) फासा ६) सहावो ७) आस्ति ८) कट्ठा ९) सुहुमा १०) छप्पिय१०
११) पलिया १२) अदिस्सा १३) पंचवि १४) एग १५) सया १६) थिर १७) स्कंध १८) चेव १९) गलन
२०) हवंति

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B
१) चंडकौशिक	१) काल
२) सर्यकांतमणि	२) परोपकार
३) अपोहा	३) सुमतिनाथ प्रभु
४) वृक्ष	४) द्रव्यपूजा
५) वचन	५) मधुरता
६) तुंबुरयक्ष	६) बुद्धि
७) संभनाथ प्रभु	७) पापभिरुता
८) सुलस	८) धर्म श्रवण
९) अंगशुद्धि	९) आतप
१०) अजीव	१०) दुरितारी यक्षिणी

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. श्री पद्म प्रभुस्वामी का छद्मस्थ काल कितना ?
२. जिनमंदिर की मुख्य आशातना कितनी ?
३. स्थावर जीवों के कुल भेद कितने ?
४. कालचक्र का प्रमाण कितना ?
५. हाथ की खाली अंजली में कितने जीवभेद संभवित है ?
६. १ अहोरात्री के मुहुर्त कितने ?
७. अजीव के मुख्य भेद कितने ?
८. श्री अजितनाथ प्रभु का आयुष्य कितना ?
९. पुद्गल के लक्षण कितने ?
१०. एकेन्द्रिय जीवों को कितनी पर्याप्ति होती है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. मुख से मधुर वचनो से प्रभु के गुणों की स्तवना करना यह प्रणाम त्रिक है ।
२. श्री सुमतिनाथ प्रभु कौशांबी में केवलज्ञान पाये ।
३. प्रथम कुलकर का जन्म सुषम-दुषम आरे का पल्योपम का आठवाँ भाग बाकी रहा तब हुआ ।
४. जिस काल में समस्त पदार्थों के वर्णादि गुणो की अनुक्रम से हानि होती है वह अवसर्पिणी काल कहलाता है ।
५. अजीव के कुल पाँच भेद है ?
६. श्री अजीतनाथ प्रभु का जन्म दुषम-सुषम नामक आरे में हुआ ।
७. अवकाश देने के स्वभाववाला धर्मास्तिकाय है ।
८. अभिनंदन स्वामी के शासन रक्षक यक्ष कुसुम थे ।
९. स्कंध से अलग हुआ छोटे में छोटा अविभाज्य सूक्ष्म अणु वह प्रदेश है ।
१०. जंबुस्वामी का आत्मा धर्मश्रवण से जागा ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. जो कार्य जिस काल में करने से लाभ की बजाय नुकसान हो वह अयोग्य काल अकाल कहलाता है ।
२. सत् का संग कर उसके रंग में रंगकर सज्जन बनने में उद्यमवंत बने ।
३. नहीं अब मुझे ऐसे पाप करना नहीं है.... उसके कटु परिणाम भोगने नहीं है ।
४. सिद्ध के जीव अलोक के पास स्थिर रहते हैं, उसमें भी अधर्मास्तिकाय की ही सहायता है ।
५ मन में प्रभु दर्शन करने की ही दृढ भावना सहित मार्ग में यतना पूर्वक चलना ।
६. इस आरे में जन्मा हुआ कोई भी मनुष्य इस काल में मोक्ष में नहीं जा सकता ।
७. इसका चिन्तन मनन करने से विश्व में चलने वाली चित्र विचित्र क्रियाओं का रहस्य खुला होता है ।
८. वृक्ष अपने फल औरों को देते ही हैं, साथ में शीतल छांव भी देते है ।
९. समय समय पर स्कंध के साथ दूसरे नये परमाणु जुडते रहते है और पुराने पुद्गल उससे अलग होते रहते है ।
१०. इन गुणों के पाथेय बिना सन्मार्ग का पथिक बनना संभव नहीं।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. जीओ और जीने दो
२) पुद्गलास्तिकाय
३. धर्म श्रवण
३) साधारण वनस्पतिकाय
५) मानव जीवन की महानता